युवा बनें ऊर्जा परिवर्तन का हिस्सा

किसी भी देश की उन्नति और विकास के लिए ऊर्जा उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी जीवन के लिए आक्सीजन। हमारे आधुनिक जीवन के लगभग सभी पहलू ऊर्जा से प्रभावित हैं। घरों में रोशनी से लेकर खाना पकाने तक, गर्मी से राहत से लेकर मनोरंजन तक, और ऐसे ही अन्य कार्यों के लिए हम ऊर्जा का इस्तेमाल करते हैं। यह किसानों के खेतों की सिंचाई, फसलों की कटाई, उद्योगों में गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण ,लोगों की आवाजाही और वस्तुओं की ढुलाई जैसे सभी कार्यों को शक्ति देती है।

पिछले दो दशकों में भारत की ऊर्जा मांग दोगुनी हो चुकी है। आज भारत ऊर्जा खपत में दुनिया में तीसरे स्थान पर है। हालांकि, हमारी प्रति व्यक्ति ऊर्जा की मांग वैश्विक औसत के आधे से भी कम है। लेकिन विकसित अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ने के साथ हमारी ऊर्जा की जरूरतें भी बढ़ेंगी। ऐसे में भारत के सामने सवाल हैं कि सभी के लिए किफायती और भरोसेमंद ऊर्जा की सुलभता कैसे सुनिश्चित हो? कैसे जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कार्बन उत्सर्जन को कम करते हुए ऊर्जा की बढ़ती हुई मांग पूरी की जाए? और इन लक्ष्यों को पाने में भारतीय युवाओं का योगदान कैसे शामिल किया जाए?

भारत की सालाना ऊर्जा जरूरत में 85 प्रतिशत कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों से, जबकि शेष मांग सौर, पवन, पनबिजली और परमाणु ऊर्जा जैसे गैर-जीवाश्म ऊर्जा स्रोतों से पूरी होती है। भारत में स्वच्छ अक्षय ऊर्जा का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। लेकिन जीवाश्म ईंधन पर हमारी ज्यादा निर्भरता कई चुनौतियों को जन्म देती है, जैसे आयात पर उच्च निर्भरता, वायु प्रदूषण, सार्वजनिक स्वास्थ्य की समस्याएं और वैश्विक तापमान में वृद्धि आदि।

इनसे निपटने के लिए तीन मोर्चों पर प्रयासों को तेज करने की जरूरत है। पहला, बिजली उत्पादन के लिए अक्षय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना, साथ में ऊर्जा का कुशल वितरण और उपयोग सुनिश्चित करना। दूसरा, कुशल व बिजली से चलने वाले उपकरणों (जैसे 5-स्टार-रेटेड पंखे और इलेक्ट्रिक स्कूटर) को अपनाने में उपभोक्ताओं की मदद करना। तीसरा, सभी नागरिकों की खाना पकाने और अन्य घरेलू जरूरतों के लिए स्वच्छ व किफायती ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।इस दिशा में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने कई नीतिगत कदम उठाए हैं। भारत सरकार ने लाखों घरों तक बिजली और एलपीजी रसोई गैस के कनेक्शन पहुंचाए हैं। 2021 में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के 2070 तक नेट-जीरो अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य घोषित किया था। यह भी प्रतिबद्धता जताई गई है कि वर्ष 2030 तक भारत के कुल बिजली उत्पादन में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। ये बड़ी उपलब्धि होगी।

ऐसे में सवाल है कि इस स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन में युवा कैसे योगदान कर सकते हैं?भारत की कुल जनसंख्या में युवाओं (15-29 वर्ष आयु वर्ग) की हिस्सेदारी प्रमुख (27 प्रतिशत) है। उनकी अलग-अलग भूमिका उन्हें सभी क्षेत्रों में निर्णयों को प्रभावित करने की शक्ति देती हैं। एक मतदाता के रूप में, वे राजनेताओं से ऊर्जा परिवर्तन को प्राथमिकता देने की मांग कर सकते हैं। उद्यमियों, श्रमिकों और किसानों के रूप में, वे स्वच्छ ऊर्जा समाधानों के विकास और उन्हें अपनाने के लिए कदम उठा सकते हैं। एक उपभोक्ता के रूप में,वे स्वच्छ ऊर्जा और प्रौद्योगिकी की मांग कर सकते हैं। युवा अपने परिजनों और दोस्तों को स्मार्ट ऊर्जा उपयोगकर्ता बनने के लिए तैयार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने आस-पास के लोगों को नया पंखा, एसी या गीजर खरीदते समय 5-स्टार या 4-स्टार लेबल वाले उपकरण चुनने, इस्तेमाल न होने पर बिजली उपकरणों को बंद करने और स्मार्ट मीटर के उपयोग से बिजली खपत की निगरानी करने जैसे कदमों के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ये कदम न केवल ऊर्जा की बर्बादी रोकेंगे, बल्कि संबंधित खर्चों और अंत में कार्बन उत्सर्जन को घटाएंगे। यदि सभी भारतीय घर में 5-स्टार लेबल वाले सीलिंग पंखें लगा लें तो भारत अपनी सालाना आवासीय ऊर्जा खपत को 15 प्रतिशत कम कर लेगा।

शालू अग्रवाल
सीनियर प्रोग्राम लीड,
काउंसिल आन एनर्जी
इनवायरनमैंट एंड वाटर

देश का भविष्य युवाओं के हाथ में हैं। युवाओं को नई टेक्नोलाजी और ऊर्जा की कम खपत करने वाले उपकरणों की अच्छी समझ होती है। ऐसे में नई टेक्नोलाजी और ऊर्जा कुशल उपकरणों का इस्तेमाल करके वे न सिर्फ ऊर्जा की बचत कर सकते हैं बल्कि ऊर्जा का प्रभावी इस्तेमाल भी कर सकते हैं।